॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री अम्बे जी की आरती

श्री शिवानंद स्वामी (अंतिम पद में नाम)

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥

माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजै।
रक्तपुष्प गल माला, कंठन पर साजै॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

कानन कुंडल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर, सम राजत ज्योती॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

शुंभ-निशुंभ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

चंड-मुंड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया... ॥

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया… ॥

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया… ॥

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख संपत्ति करता॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया… ॥

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया… ॥

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया… ॥

श्री अंबेजी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख-संपत्ति पावै॥
॥ जय अम्बे गौरी मैया… ॥

॥ बोलो माँ दुर्गा (अम्बे) की जय ॥